॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

सिद्धि-यामलोक्त श्रीत्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्रम्

श्वेत-पद्मासनारूढां, शुद्ध-स्फटिक-सन्निभाम्।
वन्दे वाग्-देवतां ध्यात्वा, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।१।।

शैलाधि - राज - तनयां, शङ्कर - प्रिय - वल्लभाम्।
तरुणेन्दु-निभां वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।२।।

सर्व-भूत-मनोरम्यां, सर्व-भूतेषु संस्थिताम्।
सर्व-सम्पत्करीं वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।३।।

पद्मालयां पद्म-हस्तां, पद्म-सम्भव-सेविताम्।
पद्म-राग-निभां वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।४।।

पञ्च-वाण-धनुर्बाण-पाशांकुश-धरां शुभाम्।
पञ्च-ब्रह्म-मयीं वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।५।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी देवी का ध्यान करके **श्वेत पद्म** (कमल) के आसन पर विराजमान **शुद्ध स्फटिक-मणि** के समान प्रभावाली **वाग्-देवता** की वन्दना करता हूँ ।।१।। **शैलाधिराज** (पर्वत-राज हिमालय) की पुत्री और **श्रीशङ्कर जी** की प्रिय वल्लभा, जो **तरुण चन्द्रमा** के समान प्रभावान् हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की मैं वन्दना करता हूँ ।।२।। जो सभी भूतों (**मानव, दिव्य, अचेतन** आदि समस्त जीव-धारी) के लिए **अत्यन्त मनोरम** (मन को हरनेवाली, सुन्दर, सुघड़) हैं, जो समस्त भूतों में निवास करती हैं; जो **सभी प्रकार की सम्पत्ति** (भौतिक और आध्यात्मिक) करनेवाली (देनेवाली) हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ ।।३।। जिनका आलय (घर) **पद्म** है, जो हाथों में **कमल** धारण करती हैं, जो **पद्म-सम्भव** (**ब्रह्माजी**) से सेवित हैं (पूजी जाती हैं), उन **पद्म-राग मणि** (लाल-माणिक्य) के समान वर्णवाली **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ ।।४।। **पञ्च-वाण** (१ द्रावण, २ क्षोभण, ३ वशीकरण, ४ आकर्षण, ५ सम्मोहन), **धनुष, वाण, पाश** और **अंकुश** धारण करनेवाली, कान्ति-मयी, **पञ्च-ब्रह्म-मयी** (१ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ रुद्र, ४ ईश्वर और ५ सदा-शिव-मयी) **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।५।।

षट् - पुण्डरीक - निलयां, षडानन - सुपूजिताम्।
षट् - कोणान्तः - स्थितां वन्दे, देवीं त्रिपुर - सुन्दरीम्।।६।।

हरार्ध - भाग - निलयामम्बामद्रि - सुतां मृडाम्।
हरि - प्रियाऽनुजां वन्दे, देवीं त्रिपुर - सुन्दरीम्।।७।।

अष्टैश्वर्य - प्रदामम्बामष्ट - दिक् - पाल - सेविताम्।
अष्ट - मूर्ति - मयीं वन्दे, देवीं त्रिपुर - सुन्दरीम्।।८।।

नव - माणिक्य - मुकुटां, नव - नाथ - सुपूजिताम्।
नव - यौवन - शोभाढ्यां, वन्दे त्रिपुर - सुन्दरीम्।।९।।

काञ्ची-वास-मनोरम्यां, काञ्ची-दाम-विभूषिताम्।
काञ्ची-पुरीश्वरीं वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।१०।।

षट्-पुण्डरीक (छः दलों का कमल अर्थात् **स्वाधिष्ठान** अथवा षट्-कमल अर्थात् **षट्-चक्र** यथा-१ मूलाधार, २ स्वाधिष्ठान, ३ मणिपूर, ४ अनाहत, ५ विशुद्ध और ६ आज्ञा-चक्र) में निवास करनेवाली, **षडानन** (कुमार कार्तिकेय) से पूजित और षट्-कोण के अन्तस् (भीतर) में स्थित **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।६।। **हर** (शिव) के आधे भाग में निवास करनेवाली **मृडानी** (पार्वती), जो **अद्रिसुता** (पर्वत-राज की पुत्री) हैं, **हरि-प्रिया** (लक्ष्मी) की अनुजा हैं, उन **जगदम्बा देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।७।। **आठ प्रकार के ऐश्वर्य** प्रदान करनेवाली **अम्बिका**, जिनकी सेवा **आठों दिक्-पाल** (१ इन्द्र, २ अग्नि, ३ यम, ४ निऋति, ५ वरुण, ६ वायु, ७ कुबेर तथा ८ ईशान) करते हैं, जो **अष्ट-मूर्ति-मयी** (१ शैली, २ दारु - मयी, ३ लोही, ४ लेप्या, ५ लेख्या, ६ सैकती अर्थात् रेत से निर्मित, ७ मनो-मयी और ८ मणि-मयी) हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।८।। **नवीन (उज्ज्वल) माणिक्य-रत्नों से बना मुकुट** धारण करनेवाली, **नव - नाथों** (१ प्रकाशानन्द-नाथ, २ विमर्शानन्द-नाथ, ३ आनन्दानन्द-नाथ, ४ ज्ञानानन्द-नाथ, ५ सत्यानन्द-नाथ, ६ पूर्णानन्द-नाथ, ७ स्वभावानन्द-नाथ, ८ प्रतिभानन्द-नाथ, और ९ सुभगानन्द-नाथ) के द्वारा भली प्रकार से पूजी गई, नव-यौवन से शोभिता **श्री-त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।९।। जिन्हें **काञ्ची-पुरी** में रहना अत्यन्त प्रिय है, जो **सुन्दर पुष्पों से निर्मित करधनी** से विभूषिता हैं अर्थात् धारण किए हैं और जो **काञ्ची-पुरी** की ईश्वरी(स्वामिनी) हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ ।।१०।।

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं देवि!, सुन्दरी-प्रीति-दायकं। महा-निशा-काले पाठ-मात्रेण सिद्धिर्भवति।।१।।
एकादश-सहस्राणि, संख्या चास्य पुरस्क्रिया। ततः काम्यार्थे प्रयोगान्, साधयेत् साधकोत्तमः।।२।।
मारणं मोहनं वश्यं, स्तम्भनोच्चाटनादिकं। पाठ-मात्रेण सिद्ध्यन्ति, सत्यं सत्यं न संशयः।।३।।
निष्कामो यः पठेन्नित्यं, पञ्च-तत्त्व-समन्वितम्। धर्मार्थ-काम-मोक्षं च, लभते नात्र संशय।।
इह-लोके सुखं भुक्त्वा, चान्ते देवी-लोके वसेत् ।।४।।

।। सिद्धि-यामले श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रम् ।।

हे देवि, यह **त्रिपुर - सुन्दरी** की प्रीति (कृपा) देनेवाला स्तोत्र तुमसे कहा है। **महा-निशा-काल** में इसके पाठ-मात्र से सिद्धि मिलती है।।१।। **ग्यारह हजार** इसके पुरश्चरण की संख्या है अर्थात् **ग्यारह हजार पाठ** से इसका पुरश्चरण होता है, तब उत्तम साधक **काम्य प्रयोग** करे।।२।। **मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन** आदि केवल इसके पाठ-मात्र से सिद्ध हो जाते हैं। यह सत्य है, सत्य है, इसमें संशय नहीं ।।३।। जो **निष्काम** (केवल देवता की प्रीति चाहनेवाला) होकर **पञ्च- तत्त्वों** (१ मद्य, २ मांस, ३ मत्स्य, ४ मुद्रा और ५ मैथुन) सहित नित्य पाठ करता है, वह **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष** को पाता है, इसमें संशय नहीं। इस लोक में सुखों को भोगकर वह अन्त में **देवी-लोक** में निवास करता है।।१४।।